

नई शिक्षा नीति और उसके दृष्टिकोण को लागू करने में छात्रों के लिए चुनौतियाँ

डॉ. माधवी मारडीकर¹ and डॉ. सुनील शिवप्रसाद कापगत²

डायरेक्टर ऑफ फिजिकल एज्युकेशन, वैनगंगा कॉलेज ऑफ फिजिकल एज्युकेशन, फिजिकल एज्युकेशन अँड कॉर्डिनेटर, साकोली, जि. भंडारा¹

सहायक प्राध्यापक, इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्स, नागपुर²

अमृत:- छात्रों को अक्सर अपनी शैक्षणिक शिक्षा को अपनी एथलेटिक गतिविधियों के साथ एकीकृत करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति छात्रों के समग्र विकास में खेलों के महत्व को पहचानती है और संस्थानों को खेल शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करती है। हालाँकि, इन छात्रों को अभी भी अपने समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और शैक्षणिक प्रतिबद्धताओं के साथ कठोर प्रशिक्षण कार्यक्रम को संतुलित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इससे तनाव का स्तर बढ़ सकता है, असाइनमेंट अधूरे रह सकते हैं और पाठ्यक्रम पूरा करने में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, प्रतियोगिताओं और टूर्नामेंटों के लिए व्यापक यात्रा से शारीरिक और मानसिक थकान हो सकती है, जिससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। खेल छात्रों का समर्थन करने के लिए, शैक्षणिक संस्थानों को लचीली उपस्थिति नीतियों, वैकल्पिक शिक्षण विधियों और उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समर्पित सहायता प्रणालियों को लागू करने पर विचार करना चाहिए। इन चुनौतियों का समाधान करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति खेल छात्रों के समग्र विकास को बेहतर ढंग से बढ़ावा दे सकती है।

मुख्य शब्द:- खेल छात्र, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, चुनौतियाँ और समग्र विकास

परिचय :

खेल और शिक्षा विद्यार्थी के विकास के दो महत्वपूर्ण घटक हैं। हालाँकि, खेल और शैक्षणिक शिक्षा का एकीकरण खेल छात्रों के लिए चुनौतियाँ पेश कर सकता है। इस लेख का उद्देश्य नए शैक्षिक दृष्टिकोणों को लागू करते समय छात्रों के सामने आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना है। इन चुनौतियों को समझकर, शिक्षक और हितधारक प्रभावी समाधान की दिशा में काम कर सकते हैं जो छात्रों के समग्र विकास का समर्थन करते हैं। नई शिक्षा नीति और विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में खेल शिक्षा सुविधाएं समग्र विकास को बढ़ावा देने और छात्रों के लिए अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नई शिक्षा नीति, समग्र शिक्षा पर जोर देने के साथ, छात्रों के समग्र विकास में खेलों के महत्व को पहचानती है। यह विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ खेल प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए पर्याप्त खेल शिक्षा सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इन सुविधाओं का उद्देश्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जहां छात्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हुए खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें (मोहरमन एट अल., 2008 और सोनू और संदीप 2021)।

विश्वविद्यालय और कॉलेज खेल के बुनियादी ढांचे, जैसे अच्छी तरह से सुसज्जित व्यायामशाला, खेल मैदान, ट्रैक, स्विमिंग पूल और इनडोर खेल सुविधाओं में तेजी से निवेश कर रहे हैं। ये सुविधाएं विभिन्न खेल विषयों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे छात्रों को

अपनी एथलेटिक क्षमता का पता लगाने और उचित प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति मिलती है। खेल छात्रों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आधुनिक खेल उपकरण और सुविधाओं की उपलब्धता आवश्यक है (ऐथल एट अल., 2021)। इसके अलावा, विश्वविद्यालय और कॉलेज खेल शिक्षा कार्यक्रमों को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर रहे हैं। ये कार्यक्रम खेल विज्ञान, खेल प्रबंधन, कोचिंग और खेल मनोविज्ञान में विशेष पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। खेल शिक्षा को शैक्षणिक ढांचे में एकीकृत करके, संस्थान यह सुनिश्चित करते हैं कि खेल छात्रों को अपने चुने हुए क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्राप्त हों। नई शिक्षा नीति प्रशिक्षित खेल संकाय और प्रशिक्षकों की आवश्यकता पर भी जोर देती है। योग्य प्रशिक्षक और प्रशिक्षक खेल प्रतिभा को निखारने, छात्रों का मार्गदर्शन करने और प्रभावी प्रशिक्षण पद्धतियों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को अनुभवी खेल पेशेवरों की भर्ती के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो खेल छात्रों को विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 का मसौदा)।

2.0: समय प्रबंधन:

छात्रों के सामने आने वाली एक महत्वपूर्ण कठिनाई अपने समय का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना है। कठोर प्रशिक्षण कार्यक्रम और शैक्षणिक प्रतिबद्धताओं को संतुलित करना भारी पड़ सकता है। अक्सर, खेल छात्रों के पास पढ़ाई, असाइनमेंट पूरा करने और पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने के लिए सीमित समय होता है। इस चुनौती से तनाव का स्तर बढ़ सकता है और शैक्षणिक प्रगति में बाधा आ सकती है (ऐथल एट अल., 2019)।

खेल छात्रों के सामने समय प्रबंधन एक महत्वपूर्ण कठिनाई है क्योंकि वे अपने कठोर प्रशिक्षण कार्यक्रम और शैक्षणिक प्रतिबद्धताओं को संतुलित करने का प्रयास करते हैं (ऐथल एट अल., 2021)। गहन खेल प्रशिक्षण सत्रों, प्रतियोगिताओं और शैक्षणिक जिम्मेदारियों के बीच जूझना भारी पड़ सकता है और छोड़ना पड़ सकता है

जिन छात्रों के पास पढ़ाई, असाइनमेंट पूरा करने और पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने के लिए सीमित समय है। समय की इस कमी के परिणामस्वरूप खेल छात्रों में तनाव का स्तर बढ़ सकता है (सोनू और संदीप 2021)।

खेल प्रशिक्षण और प्रतियोगिता कार्यक्रम की कठिन प्रकृति के कारण अक्सर खेल छात्रों को अपने खेल के लिए लंबे समय तक समर्पित करने की आवश्यकता होती है, जिससे शैक्षणिक गतिविधियों के लिए बहुत कम समय बचता है। परिणामस्वरूप, उन्हें अपनी पढ़ाई के लिए आवश्यक समय और ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो सकती है, जिससे असाइनमेंट अधूरे रह जाएंगे, सबमिशन में देरी होगी और कोर्सवर्क को पूरा करने में कठिनाई होगी। यह अंततः उनकी शैक्षणिक प्रगति और प्रदर्शन में बाधा बन सकता है। इसके अलावा, खेल के छात्रों के लिए पाठ्येतर गतिविधियों में शामिल होने, सामाजिक मेलजोल और आराम करने के लिए उपलब्ध सीमित समय अलगाव और जलन की भावनाओं को जन्म दे सकता है। उनके लिए स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जो समग्र कल्याण और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक है। शैक्षणिक और अपने खेल दोनों में उत्कृष्टता प्राप्त करने का दबाव उच्च स्तर के तनाव और चिंता में योगदान कर सकता है (ऐथल एट अल., 2016)

3.0: छूटी हुई कक्षा अनुदेश:

खेल आयोजनों, प्रतियोगिताओं या प्रशिक्षण शिविरों के कारण, खेल छात्र नियमित कक्षा निर्देश से चूक सकते हैं। कक्षाओं से अनुपस्थित रहने के परिणामस्वरूप ज्ञान में कमी आ सकती है और नई शैक्षिक अवधारणाओं की उनकी समझ में बाधा आ सकती है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि खेल छात्रों को छूटे हुए पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन और सहायता प्रदान करने के लिए उचित उपाय किए जाएं। खेल आयोजनों, प्रतियोगिताओं या प्रशिक्षण शिविरों में शामिल होने

के कारण खेल छात्रों के लिए छूटी हुई कक्षा निर्देश एक महत्वपूर्ण चुनौती है। इन प्रतिबद्धताओं के कारण अक्सर उन्हें नियमित कक्षा सत्रों से दूर रहना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप उनके ज्ञान में कमी आती है और नई शैक्षिक अवधारणाओं को समझने में संभावित कठिनाइयाँ होती हैं। जब खेल के छात्र कक्षा की शिक्षा से चूक जाते हैं, तो उन्हें पाठ्यक्रम की गति बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है और उन्हें कक्षा की चर्चाओं और गतिविधियों में शामिल होने का अवसर नहीं मिल पाता है। इसके परिणामस्वरूप सीखने के महत्वपूर्ण अनुभवों का नुकसान हो सकता है और उनकी समग्र शैक्षणिक प्रगति में बाधा आ सकती है (निडेन, पी 2003 और ऐथल एट अल., 2015)।

इस चुनौती से निपटने के लिए, खेल छात्रों को छूटे हुए कोर्सवर्क को पूरा करने में सहायता करने के लिए उचित उपाय करना महत्वपूर्ण है। शैक्षणिक संस्थान छात्रों को उनके सीखने में अंतर को पाटने में मदद करने के लिए रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान, ऑनलाइन सामग्री या पूरक संसाधन जैसे संसाधन प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षकों और सहपाठियों के साथ संचार चैनल स्थापित करने से खेल छात्रों को स्पष्टीकरण प्राप्त करने और कक्षा समुदाय से जुड़े रहने में मदद मिल सकती है। खेल छात्रों की जरूरतों को समायोजित करने के लिए संस्थान लचीले शेड्यूलिंग विकल्पों या वैकल्पिक शिक्षण व्यवस्थाओं को लागू करने पर भी विचार कर सकते हैं, जैसे फ्लिप क्लासरूम या मिश्रित शिक्षण दृष्टिकोण। ये रणनीतियाँ यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती हैं कि छूटे हुए कक्षा निर्देश उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव नहीं डालते हैं (देसाई एट अल., 2014)।

4.0: यात्रा और थकान:

खेल छात्रों को अक्सर प्रतियोगिताओं और टूर्नामेंटों के कारण लंबी यात्रा का सामना करना पड़ता है, जिससे शारीरिक और मानसिक थकान हो सकती है। यह थकान उनकी ध्यान केंद्रित करने और अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। शैक्षणिक संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे गहन खेल व्यस्तताओं के दौरान खेल छात्रों को समायोजित करने के लिए लचीली उपस्थिति नीतियों, वैकल्पिक शिक्षण विधियों और समर्थन प्रणालियों पर विचार करें। खेल छात्रों को प्रतियोगिताओं और टूर्नामेंटों में भाग लेने के कारण अक्सर व्यापक यात्रा का अनुभव होता है। इस निरंतर यात्रा के परिणामस्वरूप शारीरिक और मानसिक थकान हो सकती है, क्योंकि एथलीटों को अक्सर लंबी यात्राएं करनी पड़ती हैं और जेट लैग से जूझना पड़ता है। शारीरिक परिश्रम और बाधित नींद पैटर्न के संयोजन से उनकी ध्यान केंद्रित करने और अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। यात्रा के कारण होने वाली थकान से सतर्कता में कमी, संज्ञानात्मक कार्य में कमी और जानकारी को बनाए रखने और संसाधित करने में कठिनाई हो सकती है। परिणामस्वरूप, खेल छात्रों को कक्षा की चर्चाओं में सक्रिय रूप से शामिल होना, जटिल अवधारणाओं को समझना और अपनी पूरी क्षमता से असाइनमेंट पूरा करना चुनौतीपूर्ण लग सकता है (संदर्भ: मार्टिन, 2022)। इससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और समग्र सीखने के परिणामों में बाधा आ सकती है (सोनू और संदीप 2021)।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, शैक्षणिक संस्थानों को लचीली उपस्थिति नीतियों को लागू करने पर विचार करना चाहिए जो खेल छात्रों की यात्रा मांगों को ध्यान में रखें। रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान या ऑनलाइन कोर्सवर्क जैसी वैकल्पिक शिक्षण विधियां प्रदान करने से छात्रों को शैक्षिक सामग्री तक पहुंचने की अनुमति मिल सकती है, भले ही वे शारीरिक रूप से कक्षाओं में उपस्थित होने में असमर्थ हों। इसके अतिरिक्त, अकादमिक सलाहकारों या ट्यूशन सेवाओं जैसी सहायता प्रणालियाँ स्थापित करने से खेल छात्रों को उनके पाठ्यक्रम के प्रबंधन और यात्रा-संबंधी थकान के प्रभावों पर काबू पाने में सहायता मिल सकती है।

संस्थानों के लिए एक सहायक वातावरण को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है जो खेल छात्रों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानता है और उनकी भलाई को बढ़ावा देता है। इसमें खेल छात्रों को उनकी एथलेटिक प्रतिबद्धताओं और शैक्षणिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने में मदद करने के लिए समय प्रबंधन, तनाव कम करने की तकनीक और स्वस्थ जीवन शैली प्रथाओं पर संसाधन प्रदान करना शामिल हो सकता है (सुरेश एट अल।, 2019)

खेल छात्रों को अक्सर प्रतियोगिताओं और टूर्नामेंटों के कारण लंबी यात्रा का सामना करना पड़ता है, जिससे शारीरिक और मानसिक थकान हो सकती है। यह थकान उनकी ध्यान केंद्रित करने और अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। शैक्षणिक संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे गहन खेल व्यस्तताओं के दौरान खेल छात्रों को समायोजित करने के लिए लचीली उपस्थिति नीतियों, वैकल्पिक शिक्षण विधियों और समर्थन प्रणालियों पर विचार करें। खेल छात्रों को प्रतियोगिताओं और टूर्नामेंटों में भाग लेने के कारण अक्सर व्यापक यात्रा का अनुभव होता है। इस निरंतर यात्रा के परिणामस्वरूप शारीरिक और मानसिक थकान हो सकती है, क्योंकि एथलीटों को अक्सर लंबी यात्राएं करनी पड़ती हैं और जेट लैग से जूझना पड़ता है। शारीरिक परिश्रम और बाधित नींद पैटर्न के संयोजन से उनकी ध्यान केंद्रित करने और अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। यात्रा के कारण होने वाली थकान से सतर्कता में कमी, संज्ञानात्मक कार्य में कमी और जानकारी को बनाए रखने और संसाधित करने में कठिनाई हो सकती है। परिणामस्वरूप, खेल छात्रों को कक्षा की चर्चाओं में सक्रिय रूप से शामिल होना, जटिल अवधारणाओं को समझना और अपनी पूरी क्षमता से असाइनमेंट पूरा करना चुनौतीपूर्ण लग सकता है (संदर्भ: मार्टिन, 2022)। इससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और समग्र सीखने के परिणामों में बाधा आ सकती है (सोनू और संदीप 2021)।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, शैक्षणिक संस्थानों को लचीली उपस्थिति नीतियों को लागू करने पर विचार करना चाहिए जो खेल छात्रों की यात्रा मांगों को ध्यान में रखें। रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान या ऑनलाइन कोर्सवर्क जैसी वैकल्पिक शिक्षण विधियां प्रदान करने से छात्रों को शैक्षिक सामग्री तक पहुंचने की अनुमति मिल सकती है, भले ही वे शारीरिक रूप से कक्षाओं में उपस्थित होने में असमर्थ हों। इसके अतिरिक्त, अकादमिक सलाहकारों या ट्यूशन सेवाओं जैसी सहायता प्रणालियाँ स्थापित करने से खेल छात्रों को उनके पाठ्यक्रम के प्रबंधन और यात्रा-संबंधी थकान के प्रभावों पर काबू पाने में सहायता मिल सकती है।

संस्थानों के लिए एक सहायक वातावरण को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है जो खेल छात्रों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानता है और उनकी भलाई को बढ़ावा देता है। इसमें खेल छात्रों को उनकी एथलेटिक प्रतिबद्धताओं और शैक्षणिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने में मदद करने के लिए समय प्रबंधन, तनाव कम करने की तकनीक और स्वस्थ जीवन शैली प्रथाओं पर संसाधन प्रदान करना शामिल हो सकता है (सुरेश एट अल।, 2019)

5.0: सीमित शैक्षणिक सहायता

खेल छात्रों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप विशेष शैक्षणिक सहायता की कमी का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें अपने शैक्षणिक कार्यभार को प्रबंधित करने, वैयक्तिकृत ट्यूशन प्राप्त करने और अपने प्रशिक्षण और प्रतियोगिता कार्यक्रम के अनुरूप संसाधनों तक पहुंचने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है। मेंटरशिप कार्यक्रम, अकादमिक परामर्श और नामित सहायक कर्मचारियों को लागू करने से खेल छात्रों को काफी लाभ हो सकता है और उन्हें उनके सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने में मदद मिल सकती है। खेल छात्रों को अक्सर विशिष्ट शैक्षणिक सहायता की कमी का सामना करना पड़ता है जो उनकी

विशिष्ट आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप होती है। उन्हें अपने कठिन प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा कार्यक्रम को संतुलित करते हुए अपने शैक्षणिक कार्यभार के प्रबंधन में सहायता की आवश्यकता होती है।

उचित समर्थन के बिना, खेल छात्र अपने समय को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने, कार्यों को प्राथमिकता देने और शैक्षणिक प्रगति को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर सकते हैं (प्रताप, जी 2014 और डौफिनी एट अल।, 2019)।

खेल छात्रों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करने में मेंटरशिप कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्हें अनुभवी गुरुओं के साथ जोड़ना जो शिक्षा और एथलेटिक्स में संतुलन की चुनौतियों को समझते हैं, मूल्यवान अंतर्दृष्टि, प्रेरणा और सलाह प्रदान कर सकते हैं। ये सलाहकार लक्ष्य निर्धारण, समय प्रबंधन रणनीतियों और शैक्षणिक वातावरण को नेविगेट करने में सहायता कर सकते हैं। विशेष रूप से खेल छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाई गई शैक्षणिक परामर्श सेवाएँ भी फायदेमंद हो सकती हैं। पेशेवर परामर्शदाता अपनी एथलेटिक प्रतिबद्धताओं की अनूठी मांगों पर विचार करते हुए पाठ्यक्रम चयन, शैक्षणिक योजना और कैरियर विकास पर मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। यह समर्थन खेल छात्रों को उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को अनुकूलित करने के लिए सूचित निर्णय लेने और रणनीति विकसित करने में मदद कर सकता है (मोहरमन एट अल।, 2008)।

6.0: नई शिक्षा नीति और खेल:

भारत में नई शिक्षा नीति, शिक्षा प्रणाली को बदलने और खेल सहित विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पेश की गई है। हालाँकि, खेल छात्रों को नई नीति को लागू करने और शैक्षणिक आवश्यकताओं के साथ अपनी एथलेटिक गतिविधियों को संतुलित करने में विशिष्ट चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। खेल छात्रों के सामने एक बड़ी कठिनाई विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में खेल शिक्षा सुविधाओं की सीमित उपलब्धता है। जबकि नई शिक्षा नीति समग्र विकास और खेल शिक्षा पर जोर देती है, पर्याप्त खेल बुनियादी ढांचे और संसाधनों का वास्तविक कार्यान्वयन एक चुनौती बनी हुई है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।

एक और चुनौती खेल छात्रों के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रम में लचीलेपन की कमी है। नई शिक्षा नीति बहु-विषयक शिक्षा और कौशल विकास को प्रोत्साहित करती है, लेकिन कठोर शैक्षणिक संरचनाएँ अक्सर खेल छात्रों के लिए अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम और शैक्षणिक प्रतिबद्धताओं को संतुलित करना चुनौतीपूर्ण बना देती हैं। खेल छात्रों को शैक्षणिक संस्थानों के भीतर विशेष कोचिंग और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंचने में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जबकि नई नीति गुणवत्तापूर्ण खेल कोचिंग के महत्व पर जोर देती है, प्रशिक्षित प्रशिक्षकों और उचित प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे की उपलब्धता अक्सर सीमित होती है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।

इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए, शैक्षणिक संस्थानों के लिए खेल शिक्षा सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता देना, लचीली शैक्षणिक संरचनाएँ प्रदान करना और खेल छात्रों के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गई सहायता प्रणालियाँ स्थापित करना आवश्यक है। खेल संगठनों के साथ सहयोग, परामर्श कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और समर्पित शैक्षणिक परामर्श सेवाओं से खेल छात्रों को काफी लाभ हो सकता है

7.0: निष्कर्ष:

नए शिक्षा दृष्टिकोणों को लागू करते समय छात्रों के सामने आने वाली कठिनाइयाँ बहुआयामी हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शैक्षणिक संस्थानों, खेल संगठनों और नीति निर्माताओं के लिए सहयोग करना और व्यापक रणनीतियाँ विकसित करना महत्वपूर्ण है। इन रणनीतियों में लचीले शेड्यूलिंग विकल्प, शैक्षणिक सहायता प्रणाली और शैक्षणिक ढांचे के भीतर खेल उपलब्धियों

की मान्यता शामिल होनी चाहिए। खेल और शिक्षा के बीच अंतर को पाटकर, हम एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जो एथलेटिक और शैक्षणिक उत्कृष्टता दोनों को बढ़ावा दे, खेल छात्रों को उनके जीवन के सभी पहलुओं में आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाए।

संदर्भ

- 1 ऐथल, पी.एस. और ऐथल, शुभ्रज्योत्सना (2019)। भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्ताव 2019 में उच्च शिक्षा का विश्लेषण और इसके कार्यान्वयन की चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लेटर्स (आईजेआईएमएल), 3(2), 1–35। डीओआई [10.5281/zenodo.3271330](https://doi.org/10.5281/zenodo.3271330)।
- 2 ऐथल, पी.एस. (2016)। छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम डिजाइन और कार्यान्वयन – व्यवसाय प्रबंधन और आईटी शिक्षा में चुनौतियाँ और अवसर। आईआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज, 4(3), 423–437। डीओआई [10.21013/ijer.v4i3.99](https://doi.org/10.21013/ijer.v4i3.99)।
- 3 ऐथल, श्रीरामन और ऐथल, शुभ्रज्योत्सना (2020)। अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण। कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट कॉमर्स, श्रीनिवास यूनिवर्सिटी, मैंगलोर – 575 001, भारत, कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी, श्रीनिवास यूनिवर्सिटी, मैंगलोर, भारत
- 4 डौफिनी, डब्ल्यू.डी., बौलेटडॉफिनी, डब्ल्यू.डी., बौलेट, जे.आर., और नोर्सिनी, जे.जे. (2019)। वे विचार जो यह निर्धारित करेंगे कि योग्यता–आधारित मूल्यांकन एक स्थायी नवाचार है या नहीं। स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा में प्रगति, 24(2), 413–421।, जे.आर., और नोर्सिनी, जे.जे. (2019)। वे विचार जो यह निर्धारित करेंगे कि योग्यता–आधारित मूल्यांकन एक स्थायी नवाचार है या नहीं। स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा में प्रगति, 24(2), 413–421।
- 5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 का मसौदा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 कामसौदा, [10.5281/zenodo.15596510111](https://www.mhrd.gov.in/portal/~/media/OtherPublications/2019/06/20190620%20National%20Education%20Policy%20Draft%202019.pdf)।
- 6 सोनू रानी और डॉ. संदीप भल्ला (2021)। भारत में खेल शिक्षा: एक समसामयिक परिप्रेक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ योगिक, ह्यूमन मूवमेंट एंड स्पोर्ट्स साइंसेज 2021य 6(1):98–102
- 7 सुरेश कुमार पी.एम और ऐथल पी.एस. (2019)। उच्च शिक्षा में योग्यता मूल्यांकन और ग्रेडिंग। स्कोलेजइंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एंड अलाइड स्टडीज, 6(12), 127–136। डीओआई [10.5281/zenodo.3648182](https://doi.org/10.5281/zenodo.3648182)।